इकाई 31 सामाजिक गतिशीलता के घटक एवं शक्तियाँ

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- गतिशीलता को प्रभावित करने वाले घटकों को समझ सकेंगे; और
- इसपर आप अपने विभिन्न विचार प्रस्तुत कर सकेंगे।

31.1 प्रस्तावना

सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक स्तरीकरण के उन क्षेत्रों में से एक है जिसमें सबसे अधिक अनुसंधान हुए हैं। अभी तक आप जान चुके हैं कि विभिन्न समाजों में गतिशीलता का क्या अर्थ है। इस इकाई में हम कुछ ऐसे घटकों के बारे में विचार करेंगे जो सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव डालते हैं। इसलिए चर्चा करने से पूर्व हमें कुछ बातें ध्यान में रखनी

चाहिए। पहली बात यह है कि सामाजिक गतिशीलता स्तरीकरण के सिद्धांत से अलग नहीं है (क्योंकि जब हम सामाजिक गतिशीलता के घटकों की बात करते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से मस्तिष्क में कोई सिद्धांत होता है।) अथवा समाज की संरचना किस प्रकार होती है। दूसरे शब्दों में इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन को किसी एक समाज की स्थापना या उसकी उत्पत्ति से अलग नहीं किया जा सकता।

दूसरा पक्ष यह है कि जब हम सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव डालने वाले घटकों की चर्चा करेंगे तब इन्हें आप गतिहीन अथवा स्थिर बिल्कुल न मानें क्योंकि ये तत्व परिवर्तनीय होते हैं। सामाजिक गतिशीलता के अथवा उसकी रूढ़िवादिता के किसी समाज और किसी विशेष सामाजिक स्तरीकरण के लिए दूरगामी परिणाम होते हैं। चर्चा में क्रमशः विस्तृत विवरण दिया जाएगा। अंत में विभिन्न विद्वानों के मतांतरों को भी प्रस्तुत करेंगे। जो उन्होंने सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले घटकों के संबंध में जाना है। इस भाग में हम गतिशीलता के प्रश्न पर विभिन्न तरीकों से किए गए विचारों पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे। यह सच है कि सामाजिक गतिशीलता सभी समाजों में मौजूद होती है। यहाँ तक कि भारत में जाति प्रथा के दायरे में आने वाले समाज जो खास कर 'अवरुद्ध' या बंद होते हैं उनमें भी गतिशीलता को देखा जा सकता है और औद्योगीकरण जहाँ सामाजिक गतिशीलता की दर अत्यधिक होती। इसीलिए सबसे अधिक गतिशीलता के संबंध में अनुसंधान औद्योगिक समाजों में, सामाजिक गतिशीलता, तथा वहाँ पर गतिशीलता को प्रभावित करने वाले घटकों पर हुए हैं।

रूस के प्रसिद्ध समाजशास्त्री, सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन प्रमुख रूप से किया है। उनके अनुसार, कुछ प्राथमिक घटक होते हैं जो सभी समाजों में गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। तथा दूसरी तरह के वे घटक होते हैं जो विशेष प्रकार के होते हैं। इसलिए वे खास समाजों में किसी खास समय पर ही अपना प्रभाव डालते हैं। उनका तर्क है कि कोई भी समाज पूरी तरह से अवरुद्ध या बंद नहीं होता है। साथ ही, ऐसे भी समाज नहीं होते हैं जो बिल्कुल या पूर्ण रूप से मुक्त हों क्योंकि खुले समाजों में भी कहीं न कहीं गतिशीलता के लिए बंधन होते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि कोई भी समाज न तो पूर्ण रूप से अवरुद्ध होता है और न ही पूर्ण मुक्त होता है। उन्होंने प्राथमिक घटकों की सूची बनाई है जिनकी संख्या चार है। ये हैं—जनसांख्यिकीय (जनसंख्यात्मक) घटक, अभिभावकों तथा बच्चों की सामर्थ्य या योग्यता, सामाजिक वर्गों में व्यक्तियों के गलत निर्धारण, तथा सबसे महत्वपूर्ण है—परिस्थितियों का परिवर्तन। आइए अब हम क्रमशः प्रत्येक घटक पर चर्चा करें।

31.2 जनसांख्यिकीय घटक

जनसांख्यिकीय घटक एक ऐसा घटक है जो सभी समाजों में गतिशीलता को प्रभावित करता है। प्रायः देखा गया है कि ऊँचे वर्गों में जन्म-दर निम्न वर्गों की जन्म-दर की अपेक्षा कम होती है। यद्यपि मृत्यु-दर भी निम्न वर्गों में अधिक होती है, कुल मिलाकर प्रजनन दर ऐसी होती है कि प्रायः उच्च स्थिति में निम्न वर्गों के सदस्यों के लिए कुछ स्थान रहते हैं। उदाहरण के लिए, पेरेने अपने अध्ययन में पाया है कि फ्रांस के कुछ क्षेत्रों में 12000 संख्या में 215 कुलीन वंशों में से एक शताब्दी बाद केवल 149 की संख्या रह गई। आम तौर पर उन्होंने देखा है कि इन वंशावलियों का जीवन-काल तीन से चार पीढ़ियों तक ही रहा। उसके बाद वे या तो उत्पन्न गैर-कुलीन वंशों द्वारा अथवा समानांतर वंशों द्वारा स्थापन्न कर दिए गए। इसी तरह से, एलेक्स इंकलेस ने अपने अध्ययन में जो सोवियत संघ के स्तरीकरण से संबंधित है दर्शाया है कि इस शताब्दी के मध्य में बहुत ही अधिक गतिशीलता

रही है क्योंकि इस समय युद्ध में बहुत लोग अपनी जान गँवा चुके थे। इस प्रकार, यह समय की आवश्यकता थी। इसके साथ ही दूसरा कारण तीव्र औद्योगीकरण रहा।

यह तथ्य केवल ऊँचे तथा निम्न समूहों के संबंध में ही नहीं अपितु शहरी और ग्रामीण जनसंख्या के संबंध में भी कहा जा सकता है। ग्रामीणों में प्रायः प्रजनन दर ऊँची रहती है। इसके बावजूद, शहरी जनसंख्या ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में अधिक तीव्रता से बढ़ी है। इसका मुख्य कारण जनसंख्या में वास्तविक वृद्धि नहीं है, अपितु इस जनसंख्या में वृद्धि के कारण बड़ी संख्या में शहरी प्रव्रजन का होना है।

बॉक्स 31.01

जनसांख्यिकीय तत्व सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करता है। आज आयुर्विज्ञान एवं चिकित्सा पद्धति में विकास और अन्य घटकों के कारण लोगों के जीवन-काल अर्थात् आयु में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप सेवा निवृत्ति की आयु अधिक हो गई। परिणामस्वरूप नई भर्ती के लिए पदों की संख्या कम रह गई। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि कार्य के लिए समाज में मानव संसाधनों की भरमार है। क्योंकि काम करने की आयु में विस्तार हो गया है। दूसरी तरफ, वृद्धों की देखभाल करने की समस्या भी इसी कारण पैदा हुई है। इस तरह की समस्या पश्चिमी समाजों में कई दशकों से चली आ रही है जिसका वहाँ सामना किया जा रहा है।

इसके कारण, साथ ही अनेक वृद्ध लोगों के लिए सदन, अस्पताल आदि भी खोलने पड़े हैं जहाँ पर वृद्धों को रखा जाता है और बीमार होने पर उनका इलाज तथा देखभाल की जाती है। गतिशीलता के दृष्टिकोण से इसे यूँ देखा जाना चाहिए कि इसके परिणामस्वरूप नए पदों का सृजन भी हुआ है जिन्हें अवश्य ही भरा जाना है।

अतः यह कहा जा सकता है कि जनसांख्यिकीय घटक निश्चित रूप से सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करता है, परंतु यह अपने आप में विशुद्ध रूप से जैविक परिघटना नहीं है क्योंकि इसमें सामान्यतः सामाजिक घटक भी हैं। उदाहरणार्थ, मैंडेलबाम तथा अन्य विद्वानों ने लिखा है कि किस प्रकार सांस्कृतिक घटक जैसे एक पुत्र की आकांक्षा जनसंख्या संरचना में किस तरह प्रभावित करते हैं।

31.3 प्रतिभा एवं योग्यता

सामाजिक गतिशीलता के लिए प्रतिभा एवं योग्यता को घटकों के रूप में देखने वाले अनेक लोगों ने विभिन्न तरीकों से चर्चा की है। सोरोकिन ने अपने अध्ययन में इंगित किया है कि प्रायः अभिभावकों और बच्चों की योग्यता समान नहीं होती है। आरोपित अथवा वंशगत समाजों में बच्चे सामान्यतः अपने माता-पिता की तरह अपनी वंशानुगत स्थिति के लिए हमेशा उपयुक्त नहीं होते। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि जो बच्चे अपने अभिभावकों से सम्पत्ति या पद प्राप्त करते हैं उसे वे संभाल नहीं पाते। इस समस्या से संबंधित अनेक मुद्दों के संबंध में सोरोकिन ने बहुत सारे सुझाव प्रस्तुत किए हैं। व्यक्तिगत रूप से विरासत में मिली स्थिति के अयोग्य होने पर उनपर अत्यधिक दबाव पड़ता है कि वे इस स्थिति को छोड़ दें। इसलिए पहले से ही अधिकार-प्राप्त नव-आगंतुक रिक्त स्थिति को अपनाते जाते हैं। लिपसेट तथा बैन्डिक्स का कहना है कि हमेशा ही नए प्रतिभाशाली लोग आते रहते हैं या पैदा होते रहते हैं और कहीं न कहीं उनका समावेश हो जाता है। यहाँ तक कि पैतृक पद और स्थिति प्राप्त पैतृक समाजों में भी व्यक्तिगत रूप से प्रतिभाशाली व्यक्तियों के उर्ध्व स्तर

की गतिशीलता के अवसर उपलब्ध होते हैं। ब्लॉच ने अपने अध्ययन में दिखाया है कि सामंतवाद की प्रथम स्थिति में भी अदम्य सास वाले लोग प्रगति कर सकते थे।

इसी प्रकार, बेरगल ने अपने सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन में इस तत्व को प्रदर्शित किया है। उनके अनुसार रुढ़िवादी पदानुक्रम सामंती व्यवस्था में भी निम्न जाति में जन्मे व्यक्ति को भी प्रतिभा के बल पर ऊँचे स्तर की गतिशीलता का अवसर मिलता था। सामंतवाद में जो बंधुआ मज़दूर या बंधुआ नौकर होते थे, उनकी स्वामिभक्ति के कारण उन्हें 'लिपिकीय वर्ग' में शामिल किया गया था। इसके साथ ही जो लोग घरों में काम करते थे, उन्हें भी सेवा के पुरस्कार के रूप में जागीरें तक भी दी जाती थी। टर्नर ने अपने अध्ययन में इस प्रकार की गतिशीलता को 'प्रायोजित गतिशीलता' कहा है (प्रतियोगी गतिशीलता के विपरीत)। फिर भी गतिशीलता के पूर्व-औद्योगीकरण रूप में इसका संदर्भ नहीं लिया जा सकता।

जब समाजों में यहाँ तक खुले समाजों में भी किसी नई प्रतिभा के समावेश को समस्यामूलक की दृष्टि से देखा जाता है तो इसे आसानी से स्वीकृत नहीं किया जाता है। कहने का आशय यह है कि प्रगतिशील समाज भी वास्तव में उतने खुले नहीं होते हैं, जैसा कि सामान्यतः माना जाता है। इस संदर्भ में डेविस और मूरे के कार्यात्मक सिद्धांत के बारे में संक्षेप में जानकारी देना समीचीन रहेगा। सारांश में यह सिद्धांत कहता है कि विभिन्न सामाजिक स्थितियों के कारण ही प्रतिभा और प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तिगत स्तर एवं प्रस्थिति को समाज में स्थापित किया जाता है। उस समय समाज में उसकी स्थिति भिन्न होती है। विभिन्न लाभ उनके साथ जुड़े होने के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थितियाँ अधिक योग्य व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस प्रकार से समाज बहुत महत्वपूर्ण स्थितियों में सबसे अच्छे मानव संसाधनों का प्रयोग करने में सफल होता है। अतः स्तरीकरण एक साधन है जिससे सामाजिक प्रस्थापन तथा प्रेरणा का स्वरूप बनता है।

जहाँ इस सिद्धांत को परिष्कृत तथा कठोर माना गया इसकी बुनियादी आलोचना भी हुई तथा इसका अनेक प्रकार से खंडन भी किया गया। वर्तमान चर्चा के संदर्भ में अर्थात व्यक्तियों की योग्यता के संदर्भ में विद्वानों ने पाया कि तथाकथित खुले समाज कहीं न कहीं अधिक रूढ़िवादी होते हैं जो व्यक्तियों को उनकी योग्यता के आधार पर सामाजिक स्थिति प्रदान करते हैं। यद्यपि वर्ग की उत्पत्ति में जाति या नस्ल जैसी असमानता स्पष्ट नहीं है तो भी पीढ़ी दर पीढ़ी लगभग असमानता जैसी स्थिति का पुनर्जन्म होता रहता है। अवसरों की असमानता का अर्थ है—निम्न वर्ग का अधिक योग्य व्यक्ति भी उन्नति करने में असमर्थ रहता है अथवा उसे अवसर प्राप्त नहीं होते। हम यहाँ पर कह सकते हैं कि माइकल यंग द्वारा दिया गया व्यंग्यात्मक कथन कि 'मेघाविता का उदय', 'खुले' समाजों में होता है वास्तव में गलत है। वह इस मिथक का प्रभावी ढंग से खंडन करता है कि वास्तव में प्रतिभा और योग्यता का जन्म खुले समाजों में होता है। पश्चिमी औद्योगिक समाजों में गतिशीलता के वास्तविक अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि अधिकांश गतिशीलता 'जन-गतिशीलता' है। और यह गतिशीलता श्रमिक/गैर-श्रमिक, दोनों में है। वर्ग की उत्पत्ति सबसे ऊँची स्थितियों और सबसे निम्न स्थितियों में आज भी बनी हुई है तथा स्वयं ही स्थापित हो जाती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गतिशीलता को स्पष्ट करने के लिए प्रतिभा जैसे घटक की बहुत मामूली भूमिका होती है।

31.3.1 कुलीन सिद्धांत

विल्फ्रेडो पैरेटो कुलीन सिद्धांतवादियों में से एक ने अपने अध्ययन में तर्क दिया है कि व्यक्तिगत रूप से लोग कुछ स्थितियों को प्राप्त करते हैं उसमें प्रतिभा और योग्यता ही मुख्य कारण होते हैं। उन्होंने कहा है कि स्वाभाविक योग्यताओं में स्वाभाविक ह्रास होता है या

फिर समय के अंतराल् में निम्न स्तर के लोग अपनी उन्हीं योग्यताओं को प्रदर्शित कर सकते हैं। इस तरह से कुलीन के व्यक्तिगत स्तर में परिवर्तन होता है। पैरेटो का कहना है कि 'इतिहास कुलीन वंशों का कब्रिस्तान है।' यह कुलीनों की गतिशीलता का प्रसिद्ध सिद्धांत है।

पैरेटो के सिद्धांत में गतिशीलता अथवा संचरण दो प्रकार के हैं। प्रथम, प्रतिभाशाली व्यक्ति जो निम्न स्तर से आता है और उच्च स्तर में प्रवेश करता है। दूसरे, बहुत बार समय में जब ऊँचे समूहों की योग्यता पर प्रश्न-चिह्न लगाया जाता है। इसका अर्थ है कि प्रायः निम्न स्तर की ओर से उच्च वर्गों को चुनौती दी जाती है और उनकी श्रेष्ठता को नकार दिया जाता है। दूसरे शब्दों में इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत और सामूहिक गतिशीलता संभव होती है। मैक्स क्लुकमैन ने इसे 'बार-बार परिवर्तन' का नाम दिया है जिसे अफ्रीकी सरकार के परिवर्तनों में देखा जा सकता है। अतः ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार के परिवर्तन दी गई व्यवस्था के अनुरूप न हो लेकिन व्यवस्था में परिवर्तन कर देते हैं अर्थात् स्थिति की संरचना में स्व-परिवर्तन हो जाता है। मॉरिस डुवेरजर ने इसे 'सामाजिक व्यवस्था में' और 'सामाजिक व्यवस्था से परे' संघर्ष के रूप में माना है।

31.4 सामाजिक वातावरण में परिवर्तन

सोरोकिन ने सभी घटकों को तर्कसंगत माना है। लेकिन सामाजिक वातावरण में होने वाले परिवर्तन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। अप्रत्यक्ष रूप से यह सच है कि ये जनसांख्यिकीय घटक (जैसे चिकित्सा में प्रगति के कारण जीवन-काल में वृद्धि होना) तथा व्यक्तिगत प्रतिभाओं (उदाहरण के लिए, शैक्षिक अवसरों के विस्तार से प्रतिभा खोज की संभावना) को प्रभावित कर सकते हैं।

गतिशीलता के लिए सबसे प्रमुख घटक हैं—सामाजिक परिवर्तन। परिवर्तन अनेक प्रकार के होते हैं: आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक, प्रौद्योगिकीय तथा अन्य प्रकार के परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव डालते हैं। यह परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया है जो न केवल गतिशीलता पर प्रभाव डालती है बल्कि समाज के अन्य पक्षों पर भी समान रूप से अपना प्रभाव डालती है। सामाजिक वैज्ञानिकों के अनुसार सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण आर्थिक घटकों में से एक है—औद्योगीकरण।

31.4.1 औद्योगीकरण एवं गतिशीलता

गतिशीलता पर अनेक सिद्धांत बनाए गए हैं जिनमें सामाजिक गतिशीलता के साथ औद्योगीकरण के संबंधों को जोड़ा गया है। इस क्षेत्र में लिपसेट तथा बेन्डिक्स के एक महत्वपूर्ण तर्क के अनुसार पूर्व-औद्योगिक गतिशीलता दरों में औद्योगीकरण ने गतिशीलता में अत्यधिक वृद्धि की है। एक बार तो सभी समाज औद्योगीकरण के एक विशेष स्तर तक अवश्य पहुँचे हैं। इस तरह से देखने में आया है कि सामाजिक गतिशीलता की उनकी वृद्धि दर एकसमान है। इसी संदर्भ में केर तथा अन्य लोगों द्वारा प्रतिपादित कुछ भिन्न लेकिन संबंधित सिद्धांत है—'समरूप सिद्धांत'। इनका कहना है कि सभी औद्योगिक समाज गतिशीलता के एक सामान्य ढाँचे की ओर अग्रसर होते हैं जिसमें अन्य घटकों के साथ-साथ समग्र स्तरीकरण का रूप भी समान होता है।

आइए इस संबंध में सबसे पहले लिपसेट तथा बेन्डिक्स के सिद्धांत पर चर्चा करें। इसमें यूरोप एवं अमेरिका के अनेक देशों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जो बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने दो मुख्य परिकल्पनाओं को जाँच के लिए हमारे समक्ष रखा है। उनका पहला सिद्धांत है कि एक बार तो सभी समाजों ने औद्योगीकरण के खास स्तर को प्राप्त किया है तथा उनमें गतिशीलता की दर पूर्व-औद्योगीकरण से काफी अधिक थी। उनकी

दूसरी आम धारणा यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूरोपीय देशों की तुलना में गतिशीलता के लिए अधिक अवसर प्रदान किए हैं। उनके आँकड़े स्वयं बताते हैं कि उनका प्रथम सिद्धांत मानने योग्य है किंतु दूसरी परिकल्पना स्वीकार्य नहीं है। लिपसेट तथा बैन्डिक्स ने औद्योगिक समाज में गतिशीलता के घटकों पाँच प्रमुख तत्वों में विभाजित किया है, जो इस प्रकार हैं—

i) उपलब्ध रिक्तियों की संख्या में परिवर्तन

ii) प्रजनन क्षमता की विभिन्न दरें

iii) व्यवसायों के अनुसार स्थितियों में परिवर्तन

iv) विरासत में प्राप्त स्थितियों की संख्या में परिवर्तन

v) संभावित अवसरों से संबंधित कानूनी प्रतिबंधों में परिवंर्तन।

इनमें से कुछ विभिन्न प्रजनन दरों जैसे घटकों पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है। अब हम शेष घटकों पर चर्चा करेंगे।

31.4.2 उपलब्ध रिक्त स्थान

यह तो सभी लोग मानते हैं कि औद्योगीकरण कृषि से व्यावसायिक संरचना में तथा इसके बाद सेवा क्षेत्र में संचरण हुआ है। उद्योग में संचरण होते ही समाज में अचानक तीव्र गति से आर्थिक गतिविधियों का जन्म हुआ और समाज में उपलब्ध पद या स्थितियाँ जो मौजूद थी, उनकी संख्या में आशतीत वृद्धि हुई। इसके अनेक दस्तावेज़ मौजूद हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का नगरों और शहरों की ओर अत्यधिक प्रव्रजन हुआ क्योंकि गाँवों के लोग फैक्ट्रियों में रोज़गार ढूँढने के लिए शहरों की ओर निकल पड़े जो सामाजिक गतिशीलता का एक रूप है। इसमें भौगोलिक पहलू तो है ही, साथ ही उर्ध्व स्तर भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रायः यह तो स्पष्ट ही है कि ग्रामीण लोगों को शहर में रोज़गार मिलने से उनके पद, स्थिति और प्रतिष्ठा में अवश्य ही वृद्धि होगी जिससे उनका स्तर ऊँचा होगा और समाज की गतिशीलता ऊंचे स्तर की ओर बढ़ेगी। यहाँ पर दूसरे उदाहरण भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इससे अनेक सफेदपोश स्थितियों का जन्म हुआ जैसे कि कंप्यूटर व्यवसाय में। इससे उपलब्ध रिक्तियों अथवा पदों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि औद्योगीकरण एक महत्वपूर्ण घटक है जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता में न केवल तीव्रता आई बल्कि इसमें वृद्धि भी हुई है।

31.4.3 कानूनी प्रतिबंध

राजनैतिक और कानूनी ढाँचे में परिवर्तन भी सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण साधन बन सकते हैं। भारत में जाति प्रथा के कारण लोगों में पारंपरिक कार्यों का बंटवारा किया हुआ था। तथा कुछ कार्य जैसे पढ़ना-पढ़ाना निम्न वर्ग के लोगों के लिए कानूनी या पारंपरिक रूप से प्रतिबंधित थे। राजनैतिक व्यवस्था का लोकतंत्रीकरण होने से कानून के तहत सभी नागरिकों के लिए समान-अधिकारों की संकल्पना से सामाजिक गतिशीलता में जो रुकावटें थीं, उन्हें कानून के द्वारा समाप्त कर दिया गया। इन प्रावधानों के साथ ही सब नागरिकों को समान मताधिकार और पंचायती राज की व्यवस्था इत्यादि की स्थापना करके राजनैतिक क्षेत्र में सभी नागरिकों के लिए समान रूप से प्रगति एवं विकास के द्वार खोल दिए गए जो अब प्रतिबंधित थे। आनंद चक्रवर्ती ने राजस्थान में देवीसर गाँव का अध्ययन किया है जिसमें उन्होंने दर्शाया है कि किस तरह से राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ और सामाजिक गतिशीलता के लिए किस प्रकार से उसका उपयोग हुआ। दूसरे उदाहरण में बेले ने उड़ीसा

के एक गाँव का अध्ययन किया है जिसमें बताया गया है कि राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए किस-किस तरह के परिहासपूर्ण हथकंडे अपनाए गए। उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से सिद्ध होता है कि पुराने समाजों के जातिगत प्रतिबंधों को कानून द्वारा निरस्त करने से निश्चित रूप से सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई।

इस तथ्य के संबंध में कहा जा सकता है कि औद्योगीकरण और उसके लिए कुशल व्यक्तियों की माँग का अभी तक पता नहीं था। यह पारंपरिक विशेषज्ञता के आधार पर हैसियत प्राप्त करने से भिन्न परिस्थिति थी। इससे वंशानुगत स्थितियों की संख्या में गिरावट आई तथा उपलब्धता के आधार पर भरी जाने वाली स्थितियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। इसमें सबसे बड़ी भूमिका शिक्षा व्यवस्था की रही। इस अध्याय में शिक्षा पर चर्चा नहीं की जाएगी क्योंकि शिक्षा के स्तरीकरण से संबंधों की चर्चा हम अपने पाठ्यक्रमों में पहले कर चुके हैं। परंतु यहाँ यह कहना अत्यंत आवश्यक है कि यह गैर-पारंपरिक स्थितियों में वृद्धि से सीधे संबंधित है।

31.4.4 पद और स्थिति

किसी व्यक्ति की स्थिति में बिना किसी परिवर्तन के भी गतिशीलता आ सकती है, यदि उसकी स्थिति के रैंक में परिवर्तन हो जाए तो। उदाहरण के लिए, अमेरिका में एक अध्ययन से पता चलता है कि पचास के दशक में बीसवें दशक की तुलना में सरकारी पदों की अधिक प्रतिष्ठा थी। इस तरह कहा जा सकता है कि सरकारी नौकरों ने अपने काम में परिवर्तन किए बिना उर्ध्व सामाजिक गतिशीलता का अनुभव किया। निस्संदेह इससे नीचे की ओर भी गतिशीलता देखी जा सकती है। कई बार कुछ कार्यों की प्रतिष्ठा कम हो जाने से वे पहले की अपेक्षा समाज तथा अर्थव्यवस्था में कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं और इन कार्यों को करने वालों की अवनति हो जाती है।

31.4.5 समरूप परिकल्पना

औद्योगीकरण और स्तरीकरण के संबंधों के बारे में एक प्रसिद्ध और अत्यधिक बहस वाली परिकल्पना है—समरूप परिकल्पना। कैर तथा अन्य लोगों ने इस बारे में स्पष्ट वर्णन किया है। उनके अनुसार आज की दुनिया में औद्योगीकरण एक वास्तविक घटक रहा है जो सभी उद्योगीकृत समाजों को भविष्य के एक सामान्य समाज की ओर प्रेरित करता है जिसे वे बहुवादी वेतनभोगी औद्योगिक समाज के नाम से पुकारते हैं। इन समाजों में स्तरीकरण का समान ढाँचा साथ ही गतिशीलता का भी समान रूप होता है। इस प्रकार की स्थिति में गतिशीलता दर निश्चित रूप से ऊँची होगी क्योंकि औद्योगीकरण की माँग व्यक्तियों की एक स्थिति से दूसरी स्थिति में मुक्त एवं आसान गतिशीलता को उत्पन्न करेगी। एक अर्थ में यह तर्क एक कार्यवादी (व्यावसायिक) तर्क हो सकता है। उनका आशय यह भी है कि समय के अनुसार गतिशीलता में निरंतर वृद्धि होगी।

केर तथा अन्य विद्वानों के तर्कों को गोल्डथॉर्प ने व्यापक रूप से आलोचना की है। उन्होंने अपने तर्क को सबल बनाने के लिए मिलर के अध्ययनों के साक्ष्य दिए हैं जिनमें लिपसेट और बैन्डिक्स से अधिक आँकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। उसने दर्शाया है कि औद्योगिक समाजों की गतिशीलता की दरों में समानता की कमी है। अध्ययन बताता है कि शायद यह औद्योगीकरण ही नहीं है बल्कि इसके साथ अन्य घटक जैसे कि सांस्कृतिक घटक, शिक्षा इत्यादि भी हैं जो सामाजिक गतिशीलता प्रभावित करते हैं। गोल्डथॉर्प स्वयं अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि ये राजनैतिक तथा सैद्धांतिक मतभेद हैं जो समाजवादी और पूँजीवादी समाजों के बीच महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जिन्हें केर तथा उनके साथी विद्वानों ने 'औद्योगिक समाज' की श्रेणी के अंतर्गत रखा है।

अभ्यास 1

समरूप परिकल्पना के बारे में अन्य विद्यार्थियों और अध्यापकों से चर्चा कीजिए। इसे किस सीमा तक स्वीकार किया जा सकता है। अपने निष्कर्ष लिखिए।

यह केर तथा लिपसेट एवं बैन्डिक्स के तर्कों के बीच सतही समानता है। परंतु वास्तव में लिपसेट तथा बैन्डिक्स के तर्कों पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं, इनके अनुसार औद्योगीकरण के एक विशिष्ट स्तर के पश्चात गतिशीलता दरों में वृद्धि होती है लेकिन इनमें निरंतर तथा एक-समान वृद्धि की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। हमें यहाँ पर सोराकिन के कथन को ध्यान में रखना होगा जिसमें उन्होंने न तो विशेष समय के बाद गतिशीलता में लगातार वृद्धि की और न ही गिरावट की भविष्य की है। वास्तव में वे मानते हैं कि न तो औद्योगिक समाज पूर्ण रूप से मुक्त होते हैं और न ही पूर्व-औद्योगिक समाज पूरी तरह से बंद होते हैं। वास्तव में उनका कहना है कि यह गतिशीलता की दर का चक्रीय सिद्धांत है, जो समय-समय पर बढ़ेगा तथा घटेगा।

31.5 अधोमुखी गतिशीलता

अभी तक हम केवल इसपर चर्चा करते रहे हैं कि किस प्रकार परिवर्तन लोगों को ऊर्ध्व गतिशीलता की ओर ले जाते हैं। इसको परिभाषित भी किया गया है। इसी तरह के तर्क दूसरी ओर भी दिए जा सकते हैं। क्योंकि यह देखा गया है कि औद्योगीकरण के माध्यम से गतिशीलता ऊपर की ओर जाती है और उसमें वृद्धि भी करती है और इसी के कारण गतिशीलता पर्याप्त रूप से अधोमुखी भी होती है। अधोमुखी गतिशीलता इसलिए होती है कि कुछ व्यवसाय अपनी प्रतिष्ठा खो देते हैं जब उनकी स्थितियों का पुनःनिर्धारण कर दिया जाता है। इस प्रकार उन व्यवसायों को करने वाले स्वयं ही अधोमुखी गतिशीलता को प्राप्त कर लेते हैं। फिर भी, इस तरह के बहुत सारे मामले हो सकते हैं जिनमें केवल अधोमुखी गतिशीलता ही नहीं होती अपितु बहुत-सी स्थितियाँ समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसी स्थितियों का प्रयोग किया जा सके तो यह मामला संचरण (अधोमुखी) गतिशीलता की अपेक्षा संरचनात्मकता (अधोमुखी) गतिशीलता का मामला होगा।

उदाहरण के लिए जब से भारत में पॉलिस्टर और अन्य कृत्रिम वस्त्रों का प्रचलन हुआ, सूती वस्त्रों की माँग में अत्यधिक कमी आ गई। इसके साथ ही, भारतीय सूत एवं कच्चे माल की भूमण्डलीय माँग में कमी आ गई। इन कारणों से भारत में कपास की खेती करने वाले अनेक किसान उजड़ गए। कपास की खेती करने वाले किसानों में से कुछ ने अन्य फसलें उगानी शुरू कर दी, कुछ लोगों ने अन्य धंधे अपना लिए। यहाँ तक कि कुछ असहाय कपास पैदा करने वाले किसानों ने आत्महत्या तक कर ली है। उदाहरण के लिए, घरेलू सामान की या घरेलू काम-धंधे में आधुनिकता और नवीन परिवर्तनों के कारण परंपरागत व्यवसायों पर चिंतनजनक प्रभाव पड़ा है। अब वस्त्र धुलाई यानी कि धोबी के काम में अधिक लोग नहीं खपाए जा सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि धोबी के काम में मंदी इसलिए आई है कि अब घर-घर में धुलाई-मशीनें मौजूद हैं जिससे धोबी के काम में नितांत मंदी आई है। आज इस बात की चिंता नहीं है कि परंपरागत घरेलू कार्यों में कमी आई है बल्कि भारत में निम्न जातियों से संबंधित मानव प्रतिष्ठा में अत्यंत गिरावट आई है तथा उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य महत्वहीन समझे जाते हैं और वे जो कार्य करते हैं उनके माध्यम से अपना जीवन-यापन करने में असमर्थ हैं। यदि इन लोगों के जीवन-यापन के लिए अन्य धंधों का विकल्प उपलब्ध नहीं कराया गया तो ये लोग निश्चित रूप से गरीबी की अंधी खाई में डूब जाएंगे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि बेरोज़गारी अधोमुखी गतिशीलता का प्रमुख परिणाम है।

बोध प्रश्न 1

1) 'कुलीन सिद्धांत' के बारे में पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

2) सामाजिक वातावरण के महत्व को पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

3) समरूप परिकल्पना का आशय है —

(सही उत्तर पर टिक (✓) का निशान लगाइए)

i) निम्न गतिशीलता दर

ii) उच्च गतिशीलता दर

iii) गतिशीलता दरों में परिवर्तन का न होना।

iv) गतिशीलता दरों में वृद्धि होना।

रेल समाज और राष्ट्र राज्य को जोड़ती है। इसमें यात्रा के लिए विभिन्न प्रकार के डिब्बे और श्रेणियाँ होती है।

साभारः बी.किरणमई

31.6 गतिशीलता के अवरोधक

औद्योगीकरण द्वारा उर्ध्व गतिशीलता के अवसर प्रदान होने के विचार प्रस्तुत करने वाले विद्वानों द्वारा प्रायः इसके एक अन्य पहलू कि औद्योगीकरण गतिशीलता में एक अवरोधक का कार्य भी करता है, इसकी अनदेखी की गई है। हम पहले ही बता चुके हैं कि प्रतिभा गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह भी स्पष्ट किया जा चुका है कि औद्योगिक समाज उतने खुले अथवा मुक्त नहीं हैं, जितना कि बताया जाता है। कुछ लेखकों का सुझाव है कि आज की व्यवस्थित वर्ग असमानता ने अमानता के 'विषय' (केस) का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके साथ ही, यह विचार भी व्यक्त किया जाता है कि पूँजीवादी समाज भी अधिक दिनों तक असमानतावादी नहीं बना रह सकता। जैसा कि मार्क्स ने उसके होने की भविष्यवाणी की थी। इस प्रकार, असमानता में कमी आई है। इस विचार में अनेक शंकाएँ हैं। हो सकता है यह सिद्धांत पश्चिमी देशों में सत्य सिद्ध हो जाए किंतु भारत जैसे देश में ऐसा होना नितांत असंभव है। यहाँ बहुत ही व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण वस्तुओं पर विभिन्न समूहों के दावों को नकार दिया जाता है।

यह सच है कि आज अनेक व्यवसायों में शिक्षा पद्धति के माध्यम से प्राप्त की गई औपचारिक शिक्षा के आधार पर पदों को भरा जाता है या उनमें नियुक्तियाँ की जाती हैं परंतु यह कहना गलत होगा कि सभी को शिक्षा के समान अवसर मिल जाते हैं तथा सभी शिक्षाएँ समान गुणवत्ता वाली होती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि गतिशीलता में आने वाली कानूनी अड़चनों को तो समाप्त किया जा चुका है। किंतु समाज में जो असमानताएँ व्याप्त हैं। वे अपने आप में ही गतिशीलता के अवरोधक सिद्ध होती हैं।

31.7 मार्क्सवादी विचारधारा

इस समय मार्क्सवादी विचारधारा के संबंध में चर्चा कर लेना युक्तिसंगत रहेगा क्योंकि अनेक विवेचनात्मक विचार-बिंदु प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसी से लिए गए हैं। स्तरीकरण तथा गतिशीलता की मार्क्सवादी विचारधारा का मूलाधार समाज की वर्ग प्रकृति पर आधारित है। इस प्रकार, इन मामलों में मार्क्सवादी विचारधारा है। मार्क्स ने माना है कि जैसे-जैसे पूँजीवाद का विकास होता है (उन्होंने औद्योगिक समाज जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया है) समाज में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती है। (इससे उनका अभिप्राय था कि स्तरीकरण व्यवस्था गुंबद जैसी होगी जिसमें अधिसंख्य आबादी निम्न स्तर पर होगी।) यहाँ तक कि मध्यवर्ती समूह जैसे कि छोटे सर्वहारा लोग, छोटे तथा इसी प्रकार के अन्य लोग समयांतर में स्वयं को अधोगति या निम्न स्तर की ओर पाएंगे। अतः यदि संपूर्ण गतिशीलता पूँजीवाद की विशेषता है तो इसका अर्थ अधोमुखी गतिशीलता थी न कि उर्ध्वगामी। इस प्रकार, ध्रुवीकरण तथा अभावग्रस्तता के परिणामस्वरूप पूँजीवादी व्यवस्था नष्ट हो जाएगी और समाजवाद की स्थापना होगी।

बॉक्स 31.02

इसके बाद, मार्क्सवादी विचारधारा के लेखकों ने सर्वहारा-वर्ग सिद्धांत को विकसित किया। उन्होंने सेवा क्षेत्र व्यवसाय में वृद्धि को दर्शाते हुए यह जानने का प्रयास किया कि क्या नीचे के स्तर के सफेदपोश वर्ग को वास्तव में सर्वहारा वर्ग में सम्मिलित किया जा सकता है और अपने निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि इन्हें सर्वहारा वर्ग में शामिल किया जा सकता है। मुख्यतः ब्रेवरमैन तथा अन्य भी इस विचारधारा से सहमत थे, किंतु अन्य मार्क्सवादी लेखक इससे सहमत नहीं थे। मार्क्सवादी विचारधारा से भिन्न डेहंड्रोफ जैसे अन्य विद्वानों का तर्क था कि मार्क्सवादी विश्लेषण के समय से होने वाले परिवर्तनों के कारण अधिक समय तक आधुनिक समाजों को पूँजीवादी समाज नहीं कहा जाएगा। इसकी अपेक्षा इन्हें परिवर्तित पूँजीवादी समाज कहा जा सकता है।

इसलिए मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार गतिशीलता के लिए जिम्मेदार कारण मूलतः पूँजीवादी व्यवस्था में निहित हैं तथा उर्ध्वमुखी गतिशीलता के अवसरों की अपेक्षा इसमें अधोमुखी गतिशीलता ही मुख्य रूप से होती है।

31.8 व्यक्तिपरक घटक

इससे पहले हम विभिन्न विचारधाराओं के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले वस्तुपरक विभिन्न घटकों के बारे में चर्चा कर चुके हैं। आइए अब हम व्यक्तिपरक घटकों के संबंध में जानकारी प्राप्त करें अर्थात् वे घटक जो लोगों को गतिशीलता के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ पर हम यह स्पष्ट रूप से उर्ध्व गतिशीलता के लिए आकांक्षा वाले तत्वों की चर्चा करेंगे। अनेक मामलों में गतिशीलता अपनी इच्छा से नहीं होती जैसे कि अनेक व्यवसायों के स्तरों के नवीन स्तरीकरण में होता है। लेकिन कुछ व्यक्तियों में से एक जैसे हालातों में कोई व्यक्ति गतिशीलता के लिए प्रेरित होता है और कोई नहीं। इसलिए आइए अब हम सामाजिक गतिशीलता के कुछ व्यक्तिपरक घटकों के संबंध में जानकारी प्राप्त करें। हम यह आसानी से मान सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति अपने स्तर से ऊपर के स्तर को प्राप्त करने की इच्छा रखता है, न कि निम्न स्तर की ओर जाने की। इस संबंध में वेबलेन की पुस्तक 'द थ्योरी ऑफ लेज़यर क्लास' में कहा है कि प्रत्येक स्तरीकरण पद्धति स्वतः गतिशीलता का स्रोत तथा साधन है। यह इसलिए होता है कि किसी का भी अपने बारे में व्यक्तिगत अनुमान मुख्य रूप से अन्य लोगों के मूल्यांकन पर निर्भर होता है और कोई भी व्यक्ति अपने साथियों की दृष्टि में हमेशा अच्छे लगने वाले विचारों के अंतर्गत ही सोचेगा। अतः वे लोग ऐसी स्थितियों की अभिलाषा करेंगे जो समाज में लाभप्रद मानी जाती हैं। इसलिए संस्कृतिकरण की प्रक्रिया वास्तव में जाति प्रथा के मूल्यों की प्रतिबद्धता को दर्शाती है जो गतिशीलता के लिए प्रेरणा या आकांक्षा का साधन होती है।

अभ्यास 2

किसी प्रकार की सामाजिक गतिशीलता अपनाने वाले अपने जानकार लोगों में व्यक्तिपरक घटक जानने का प्रयास कीजिए। अपने निष्कर्षों पर अध्ययन केंद्र में अन्य विद्यार्थियों से चर्चा कीजिए।

परंतु बेटीली ने संकेत दिया है कि जब इच्छुक समूह उच्च समूह में शामिल होने का प्रयास करता है और उसमें वे शामिल भी हो जाते हैं तो वे उसी स्थिति में हमेशा के लिए बने रहना चाहते हैं। अतः जाति प्रथा के मामले में शामिल होना और उससे अलग होना दोनों प्रक्रियाएँ बराबर एक-साथ चलती रहती हैं। यह विचार वेबर के द्वारा प्रयोग किए गए सामाजिक सम्बद्धता के समान है।

परंतु अब हमें अपने मुख्य तर्क की ओर आना चाहिए। हम सामान्य रूप से यह कह सकते हैं कि मूल्यों की व्यवस्था, उनके प्रति प्रतिबद्धता दोनों ही अपने आप में गतिशीलता के लिए आकांक्षाओं को पैदा करती हैं अर्थात् गतिशीलता स्वयं ही आरंभ हो जाती है।

मर्टन ने सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करने में लक्ष्य समूह के महत्व के संबंध में लिखा है। उन्होंने कहा है कि कोई व्यक्ति अपने स्वयं के समूह की अपेक्षा अपने लक्ष्य समूह, जिसका वह सदस्य नहीं है, की ओर गतिशील होता है। उस स्थिति में वह जो नियम अपनाता है वे उसके वर्ग से संबंधित नहीं होते। इस प्रकार, वह अपने वर्ग के नियमों से विचलित हो जाता है। उसने इस प्रक्रिया को 'पूर्वभाषित समाजीकरण' का नाम दिया है। वे लोग जो अनेक कारणों से अपने समूह की परिधि से बाहर जाते हैं वे लोग इसी प्रकार के पूर्वभाषित समाजीकरण की प्रक्रिया से गुज़रते हैं। इसलिए संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को

हम फिर से एक बार इस उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं जहाँ व्यक्ति ऊँची जाति की परंपराओं और उसकी जीवन-शैली का पालन करने लगता है और एक समय के बाद वह जाति के क्रम में अपने लिए ऊँची जाति की मान्यता प्राप्त करने का प्रयास करता है।

31.9 सामाजिक गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तन

अब तक की गई चर्चा में हमने सामाजिक गतिशीलता का विभिन्न घटकों पर आधारित होने के रूप में और सामाजिक संरचना को स्वतंत्र रूप में देखा है। तथापि मार्क्स के उपर्युक्त विचार को संक्षिप्त रूप से उल्लेख कर सकते हैं कि गतिशीलता या गतिशीलता की कमी अपने आप में व्यवस्था परिवर्तन का एक साधन है। अतः वस्तुपरक बनाम व्यक्तिपरक विशिष्ट अलग-अलग घटकों के स्थान पर हमें इसकी संरचना तथा माध्यम और परस्पर इनके अंतःसंबंधों के रूप में देखना चाहिए। गिड्डेन्स ने गतिशीलता की परंपरागत परिचर्चाओं की आलोचना की है जो इसे निर्धारित श्रेणियों के उन वर्गों के रूप में देखती हैं जिनमें विभिन्न समयों में विभिन्न प्रकार के लोग शामिल हो सकते हैं। सकम्पटर इसे एक ऐसी बस के रूप में उद्धृत करता है जिसमें अलग-अलग श्रेणी के यात्री विभिन्न समय में यात्रा करते हैं। यहाँ पर दो प्रकार की समस्या खड़ी होती है। पहली, कोई भी व्यक्ति गतिशीलता की चर्चा को उन घटकों से अलग नहीं कर सकता जो सामान्यतः वर्ग संबंधों की संरचना करते हैं। तथा दूसरा, गतिशीलता की पूरी प्रक्रिया स्तरीकरण की पद्धति में परिवर्तन ला सकती है।

मर्टन ने सामाजिक संरचना और इसकी भिन्नताओं के बारे में लिखा है जिसमें उन्होंने कुछ और अधिक प्रकाश डाला है। उन्होंने सामाजिक रूप से स्वीकृत लक्ष्य और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधनों को अलग-अलग परिभाषित किया है। ये लक्ष्य समाज के मूल्यों को दर्शाते हैं। जो लोग इन लक्ष्यों को और इनको प्राप्त करने के साधनों को स्वीकार करते हैं वे समाज का अनुसरण करने वाले होते हैं। परंतु इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो इन लक्ष्यों को मंजूर न करें अर्थात् जैसे मूल्यों और उसी तरह से उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्वीकार ही न करें। इस तरह के लोग हो सकता है सामाजिक जीवन को छोड़ दें, निवर्तनवाद, या समाज के विरुद्ध विद्रोह कर लें और बागी बन जाएँ। जैसा कि पहले बताया गया है, बागी या विद्रोही विद्यमान संरचना में प्रगति करने के स्थान पर समाज पर नई सामाजिक संरचना की अभिधारण करने लगते हैं।

मौजूदा व्यवस्था से असंतुष्ट स्थिति व्यवस्था परिवर्तन की ओर ले जाती है जिससे नई स्थितियों की उत्पत्ति होती है और इस प्रकार गतिशीलता होती है। इसलिए वस्तुपरक तथा व्यक्तिपरक घटकों को स्पष्ट रूप से अलग-अलग करना बहुत ही कठिन है। सामाजिक संरचना अपने आप ही विसंगतियों को पैदा करती है।

बोध प्रश्न 2

सही उत्तर पर टिक (✓) का निशान लगाएँ—

1) पूँजीवाद में मार्क्स ने माना है :

   क) गरीबीकरण होगा।

   ख) अधोमुखी गतिशीलता होगी।

   ग) ध्रुवीकरण की तरफ झुकाव होगा।

   घ) उपर्युक्त सभी।

2) सामाजिक गतिशीलता में कुछ व्यक्तिपरक घटकों को पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

31.10 सारांश

हमने इस चर्चा में कुछ मुख्य संरचनाओं के साथ सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले व्यक्तिपरक घटकों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके साथ ही, हमने उन घटकों का विश्लेषण करने का भी प्रयास किया है जिनके कारण सामाजिक गतिशीलता होती है। इसमें हमने विभिन्न सिद्धांतों, विचारधाराओं को भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है जिससे विद्यार्थी अपनी विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति एवं समझ विकसित कर सके। इसके अतिरिक्त, और अध्ययन करने के लिए संदर्भ पुस्तकों की संक्षिप्त सूची उपलब्ध कराई गई है। दुर्भाग्य से भारत में गतिशीलता पर पश्चिमी विकसित देशों की तुलना में प्रमुख शोध कार्य यानी तुलनात्मक अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं है। फिर भी, हमने प्रयास किया है कि विद्यार्थियों को समुचित पक्षों की विस्तृत जानकारी हो जांए।

31.11 शब्दावली

समरूपता : एक सिद्धांत जो पूँजीवादी प्रगति के रूप में समान औद्योगिक समाजों पर अपना प्रभाव डालता है।

जनसांख्यिकी : यह जनसंख्या से संबंधित है। इसकी वृद्धि दर तथा अनेक अन्य पहलू जैसे की जीवन प्रत्याशा।

कुलीन वर्ग : समाज का वह स्तर जो धन तथा सम्पत्ति के सभी लाभों को प्राप्त करता है।

व्यक्तिपरकता : व्यक्ति के अंतर्वैयक्तिक व्यवहारों पर निर्भर करता है।

31.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गोल्ड थोर्प, जे.एच (1967), *सोशल स्ट्रेटिफिकेशन इन इंडस्ट्रियल सोसाइटी,* इन बैन्डिक्स एंड लिपसेट, प्रकाशक, क्लास, स्टेट्स एण्ड पॉवर, लंदन, रोटलेज एंड केगन पॉल।

लिपसेट, सीमोर एंड बैन्डिक्स, रीनहार्ड (1959), *सोशल मोबिलिटी इन इंडस्ट्रियल सोसाइटी,* बरेकली, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस।

31.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पैरेटो के अनुसार प्रतिभा और योग्यता किसी स्थिति या पद को प्राप्त करने के लिए प्रमुख कारण या तत्व है। पैरेटो ने तर्क दिया है कि यह एक स्वाभाविक श्रेष्ठता है जिससे कुलीन-तंत्र की उत्पत्ति होती है। इसमें यह भी हो सकता है कि कोई कुलीन व्यक्ति इस व्यवस्था के योग्य न होने पर अपनी विशिष्टता भी खो सकते हैं और यह भी संभव है कि किसी व्यक्ति में निम्न स्तर का होते हुए भी वह योग्यताएँ मौजूद हो सकती हैं और कुलीन स्तर में परिवर्तन हो सकता है।

2) सोरोकिन का विचार है कि सामाजिक वातावरण में परिवर्तन से जनसांख्यिकीय संबंधी घटकों तथा व्यक्तियों की प्रतिभा में परिवर्तन होता है जैसे कि जीवन-काल में परिवर्तन का होना। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक वातावरण में परिवर्तन होना एक प्रमुख घटक है जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता होती है। विभिन्न प्रकार के परिवर्तन जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, कानूनी, प्रौद्योगिकी यह सब गतिशीलता को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) ग

2) वेबर के अनुसार प्रत्येक स्तरीकरण की पद्धति गतिशीलता का स्रोत होती है। यह इसलिए होता है क्योंकि स्व-मूल्यांकन अन्य व्यक्ति के मूल्यांकनों पर आधारित होता है। इसके लिए व्यक्तिपरक घटक एक अच्छा उदाहरण है जो संस्कृतिकरण की प्रक्रिया है जिसमें गतिशीलता के लिए जाति प्रथा एक प्रेरक स्रोत है।